ISSN 2249-0590

मीडिया विमर्श

वेब पेज - mediavimarsh.page

डॉ. सी.जयशंकर बाबु

E-mail: mediavimarsh@gmail.com

इतिहास-विकास

प्रतीता पी.	11
डॉ. रजनीश कुमार मिश्र	14
डॉ. सुधा बोस	19
डॉ. इब्राना रहीब	21
अविन आर.एस.	25

पत्रकारिता

प्रो. के.वनजा	27
डॉ. के.रामचंद्रन नायर	32
सुचिता ई.	38

स्त्री शक्ति

फसीला एम.	41
डॉ. लीना बी.एल.	43
डॉ. सुप्रिया पी.	49
विजया चद्रन	54

मूल्यांकन-विश्लेषण

प्रो. मोहनन एम.	56
मिनु एल.जी.	59
डॉ. पी.आर. हरीश शर्मा	61

साहित्य और मीडिया

रम्या डी	65
रेशमी एस	67

शोध-पत्र

गीता कुमारी	147

श्रद्धांजलि

गिरीश कर्नाड	152
जयकृष्ण गौड़	154

साक्षात्कार

डॉ. एम.पी.उण्णिकृष्णन	71
मणिकंठन आचारी	74
अनिल कुमार टी.के.	76
सुरेश उण्णीथन	82
अभिलाषा भोसले	86

सिनेमा

प्रो. प्रमोद कोवप्रत	90
हाजी पद्मावती पी.	92
डॉ. पी. लिया	95
डॉ. रंजित एस.	100
डॉ. के. वनजा 'किरण'	104
जयश्री ए. नायर	109
डॉ. टी.रेजी कुमार	114
अंकित कविता एवं डॉ. पी. वेलसन	118

रेडियो-टेलीविजन

डॉ. रंजीत रविशैलम	121
क्रिस्टिन मेरी तोमस	123
सी.श्रीदेवी	125

वेब मीडिया

डॉ. सी.जयशंकर बाबु	128
ए.राधिका एवं डॉ. के.आम्बेडकर	132

पुस्तक समीक्षा

संतोष रंजन	136
फिरदौस खान	139
प्रो. संजय द्विवेदी	141
लोकेन्द्र सिंह	144
मीडिया विमर्श डेस्क	146
लोकेन्द्र सिंह	157

सिनेमा
डॉ. रंजित एम.

सरोकारों को प्रकट करता सिनेमा

कला और संस्कृति के क्षेत्र में केरल की एक समृद्ध पृष्ठभूमि रही है। कला का लोकप्रिय रूप सिनेमा पिछली सदी से ही केरल में जनसंचार का मजबूत साधन हो गया है। वास्तविकता समझते हुए फिल्म का आनंद लेने वाले हैं केरल के लोग। इसलिए ही पुराणों से विषय लेने के बजाय मलयालम फिल्मों में प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों का चित्रीकरण ज्यादा होता रहा। अरविंदन, अडूर गोपालकृष्णन, जॉन अब्राहम, रामु कार्याट, पी.ए. बक्कर, के.जी. जॉर्ज, एम.टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, भरतन, टी.वी. चंद्रन, पी.एन. मेनन, शाजी एन. करुण, के.पी. कुमारन, जयराज, शाजी कैलास जैसे अनेक सर्वथा प्रतिभाशाली लोग विश्व सिनेमा में मलयालम के लिए योगदान दे रहे हैं। इन तथ्यों के बावजूद यहाँ के जीवन के संबंध में वर्तमान सिनेमा को देखते हुए अध्ययन कर सकते हैं।

मलयालम सिनेमा के जनक
जी.सी.दानियल

मलयालम सिनेमा के जनक के तौर पर पहचाने जाने वाले जे.सी. डेनियल द्वारा निर्देशित 'विगत कुमारन' मलयालम का पहला मूक फिल्म माना जाता है, जिसका विमोचन 1928 में हुआ था। तब तक से बोलती फिल्मों का आविर्भाव हो चुका था। भारत में भी 1931 में पहली बोलती फिल्म का निर्माण हुआ। 1932 में दूसरी मलयालम फिल्म 'मार्तंडा वर्मा' बनी, जो मलयालम साहित्य के विख्यात साहित्यकार सी.वी.रामन पिल्लै के ऐतिहासिक उपन्यास पर आधारित थी। पहली बोलती फिल्म 'बालन' के लिए मलयालम सिनेमा को 1938 तक इंतजार करना पड़ा। इसके निर्देशक थे एस.नोटाणि। पहले कुछ वर्षों में मलयालम फिल्मों पर तमिल निर्माताओं का प्रभुत्व रहा। 1947 में केरल में पहला बड़ा फिल्म स्टूडियो उदया स्थापित किया गया

मलयालम की पहली बोलती फिल्म बालन का पोस्टर

और जल्द ही पचास के दशक में अधिक केरलवासियों ने इस क्षेत्र में कदम रखा। जी.अरविन्दन जी की सिनेमा 'जीवित नौका' (1951) मलयालम सिनेमा का मील का पत्थर माना जाता है।

1954 में अस्पृश्यता के विषय के आधार पर निर्मित फिल्म 'नीलकुयिल' के लिए राष्ट्रपति का रजत पदक मिला। इस मलयालम सिनेमा ने समूचे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा। जाने माने उपन्यासकार उरूब (पी.सी.कुट्टीकृष्णन) ने इसकी पटकथा लिखी थी। टी.के. परीकुट्टी ने

निलकुयिल फिल्म का पोस्टर

इसका निर्माण किया था और पी. भास्करन ने इसका निर्देशन किया था, जिन्होंने फिल्म में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभाई थी। इस फिल्म में सत्यन और मिस कुमारी मुख्य भूमिकाओं में थे। 1960 में स्थापित चित्रलेखा फिल्म सोसाइटी विश्व के विख्यात सिनेमा देखने का मौका केरल के लोगों को दिया। इसके बाद केरल के कोने-कोने में फिल्म सोसाइटियाँ आने लगीं। हर तरह की फिल्में देखना और उन पर विचार-विमर्श करना फिल्म सोसाइटियों का मुख्य ध्येय रहा। इनके कारण केरल में फिल्में आलोचनात्मक दृष्टि से देखने वाले लोगों की संख्या बढ़ने लगी।

पटकथा सिनेमा की आत्मा है। सिनेमा के लिए चुनने वाले कथा तन्तु को दृश्य भाषा के मदद से एक नये रूप में बदलते हैं, जिसे पटकथा कहते हैं। पटकथा में वह सब कुछ होता है, जो पर्दे पर दिखाया जाने वाला है, सारे दृश्य, संवाद ये सब जो दर्शक देखते व सुनते हैं। किसी भी फिल्म के वास्तविक कलाकार पटकथा लेखक ही है। कहानी, दृश्य तथा संवाद पटकथा के मुख्य अंग है।

मलयालम में पहली मूक फिल्म 'विगत कुमारन' की पटकथा लेखक जे.सी. डेनियल से पटकथा लेखन की शुरुआत हुई। पहली बोलती फिल्म 'बालन' के पटकथा लेखक मुतुकुलम राघवन पिल्लै का नाम भी यहाँ उल्लेखनीय है। मलयालम पटकथा का पहला रूप अप्पन तंपूरान के 'भूतरायर' है, यों माना जाता है। पुराण कहानियों के आधार पर एन.पी. चेल्लप्पन नायर जी की पटकथा 'प्रह्लादन' का नाम ही पहले आता है। मुतुकुलम राघवन पिल्लै जी की पटकथा 'जीवित नौका' नामक फिल्म के बाद अपना अलग पहचान बनाना शुरु किया। जीवन की यथार्थता का चित्रण 'न्यूस पेपर बाय' नामक फिल्म से शुरु हुई। पी. रामदास और नागवल्ली आर.एस. कुरुप्प जी ने इस फिल्म के लिए पटकथा लिखी। इसके बाद 'रारिच्चन एन्न पौरन', 'नीलक्कुयिल' जैसी फिल्में आईं। पी.सी कुट्टीकृष्णन (उरूब) जी इन दोनों फिल्मों के पटकथा लेखक हैं। जीवन के यथार्थ और आदर्शों की वास्तविकता के बीच व्यक्ति के मार्मिक संघर्षों पर आधारित होने के कारण दोनों फिल्में मलयालम पटकथा लेखन के मील के पत्थर साबित हुईं।

पटकथा लेखन के आरंभिक दौर में मलयालम के विख्यात लेखक ही पटकथा लेखक रूप में आने लगे, जो

तकषि शिवशंकर पिल्लै

मलयालम पटकथा साहित्य को एक नया चेहरा मिलने का कारण बना। मलयालम के विख्यात उपन्यासकार तकषि शिवशंकर पिल्लै, पी. केशवदेव, मलयाट्टूर रामकृष्णन, पम्मन, मुट्टत्तु वर्की, एस.के. पोट्टक्काट आदि ने मलयालम पटकथा लेखन को आगे बढ़ाया। रंग मंच से जुड़े तिक्कुरिश्शी सुकुमारन नायर, तोप्पिल भासी, सी. एल.जोस, के.टी. मुहम्मद, एस.एल.पुरम सदानंदन जैसे लोग भी पटकथा लेखन में अपना नाम अमर बनाया। भारत सरकार ने सर्वश्रेष्ठ पटकथा का पुरस्कार 1966 से शुरू किया। एस.एल. पुरम सदानंदन जी की पटकथा 'अग्निपुत्री' को 1967 में सर्वश्रेष्ठ पटकथा का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सन 1960 में एम.टी. वासुदेवन नायर जी पटकथा लेखन क्षेत्र में आये। बाद में एम.टी. जी को आलोचकों ने 'पटकथा के राजशिल्पी' की उपाधि भी दी थी। साहित्य का सिनेमा में प्रवेश से सबसे ज्यादा लाभ सिनेमा को ही मिला। साहित्यकार शब्दों के सहारे बनाए बिंबों को सिनेमा के परदे में दिखाया। साहित्य से हमें जीवन जीने की प्रेरणा और आनंद मिलता है। मलयालम फिल्मकारों ने साहित्यिक कृतियों को फिल्माने में लेखक की संवेदना, बाजार के तकाजों और फिल्म मेकिंग का जबर्दस्त तालमेल बनाया। सिनेमा से हम मनोरंजन के साथ-साथ संदेश भी ग्रहण करते हैं। इसके कारण साहित्यिक रचनाओं पर आधारित फिल्में केरल में खूब पैसे भी कमा पाईं।

मलयालम पटकथाओं को आमतौर पर निम्नलिखित चार रूपों में वर्गीकृत कर सकते हैं-

1. निर्देशक द्वारा लिखित पटकथा
2. निर्देशक की इच्छा के अनुसार पटकथा लेखक द्वारा लिखित पटकथा
3. पटकथा लेखक की अपनी रचना
4. फिल्म के लिए खर्च करने वालों के लिए लिखित पटकथा

सन 1970 से मलयालम सिनेमा का नवोत्थान काल शुरु होता है। अडूर गोपालकृष्णन, एम. टी. वासुदेवन नायर, जॉन अब्राहम, जी. अरविन्दन, पी. पद्मराजन, के.जी. जार्ज, पी.ए. बक्कर जैसे पटकथा लेखक उभर आए। वे अच्छे-अच्छे कथा तन्तुओं से पटकथा बनाए। अडूर गोपाल कृष्णन जी का 'स्वयंवरम', एम.टी. का 'निर्माल्यं', पी.ई. बक्कर का 'कबनी नदी चुवान्नाप्पोल', के.पी. कुमारन का 'अतिथि', ई. अरविन्दन का 'कंचन सीता' जैसी फिल्में इसी जमाने की थीं। मानव से जुड़ी समस्याओं का चित्रीकरण, प्रत्येक पात्रों के अंतःसंघर्षों का मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण, संगीत और प्रकाश का समन्वय, यथार्थता का प्रस्तुतीकरण आदि इस जमाने के पटकथाओं की विशेषता है।

एम.टी. वासुदेवन नायर जी कहानियों को पटकथा के रूप में बदलने का काम एक चुनौती के रूप में अपनाया था। सबसे ज्यादा कहानियों को पटकथा के रूप में आपने ही रूपांतरित किया है। 'वैशाली', 'कटव', 'ओलवुम तीरवुम', 'सदयं' आदि की पटकथाएँ उन्होंने ही लिखी थीं। मलयालम सिनेमा विश्व सिनेमा तक पहुँचने का श्रेय अडूर गोपाल कृष्णन जी को है। सिनेमा की भाषा और व्याकरण जानने वाले अडूर जी ने केरल की संस्कृति और लोक जीवन के हर एक पहलू को अपनी पटकथा में अपनाया।

एम.टी. वासुदेवन नायर

1980 से वाणिज्यिक सिनेमा, मलयालम सिनेमा का मुख्य ध्येय बन गया। लोहितदास इसी जमाने के पटकथाकार है। पटकथा को सिनेमा की आत्मा, मानने वाले लोहित दास जी ने 'भूतकण्णाटी', 'किरीटम', 'हिज हैनस अब्दुल्ला', 'कमलदलम', 'वेंकलम', 'पाथेयं', 'सल्लापम' जैसी कई पटकथाएँ लिखीं। 'यात्रा', 'अस्त्रं', 'स्वम', 'पुरप्पाड़' जैसी फिल्मों की पटकथाओं के लेखक श्री रघुनाथ पालेरी भी इसी युग में आए। अभिनेता एवं निर्देशक श्रीनिवासन जी भी पटकथा लेखन में सक्रिय हुए। आपके 'नाटोटी काट्टू', 'तलयण मंत्रम', 'उदयानाणु तारम' जैसी पटकथाएँ मलयालम सिनेमा का एक अलग चेहरा दिखा रही हैं। सामाजिक समस्याओं को तीखी संवादों के माध्यम से प्रस्तुत करने वाले टी.दामोदरन जी की 'अन्गाड़ी', 'कालापानी', 'उनरू' जैसे पटकथाओं का उल्लेख भी यहाँ प्रासंगिक है। सिर्फ बॉक्स ऑफिस के लिए सृजित पटकथाएँ भी मलयालम फिल्म दुनिया में है। ऐसे पटकथा लेखकों में कलूर डेनिस प्रमुख है। आलेप्पी शेरीफ, फासिल, प्रिय दर्शन, एस.एन. स्वामी, बालचंद्र मेनोन आदि भी इसी कोटि के हैं।

नई तकनीकों का आविर्भाव मलयालम फिल्म दुनिया में 1995 से शुरु हुआ। इतिहास और सामाजिक यथार्थों को मिल करके बनाए गए टी.वी. चंद्रन जी की पटकथाएँ यहाँ विचारणीय है। 'पोंतमाटा', 'ओर्मकल उंडायिरिक्कणम', 'मन्कम्मा', 'सुसन्ना' आदि आपके द्वारा लिखित पटकथाएँ हैं। कथित भाषा और लिखित भाषा के मिश्रण से अपनी पटकथाओं को जनप्रिय बनाने वाले रंजित की 'नंदनम', 'ब्लाक', 'आराम तम्पुरान' आदि पटकथाएँ लोगों के दिलों को जीत लिया था। अपनी कहानी की पटकथा लिखने वाला विनयन, टी.ई. रसाक, रणजी पनिक्कर, जे. पल्लाशेरी आदि की पटकथाएँ भी लोगों के दिलों को जीतने में सक्षम हुईं। 2000 आते-आते कलवूर रविकुमार, रंजन प्रमोद, डॉ. इकबाल कुट्टीपुरम, ब्लेसी जैसे युवा पटकथा लेखक आए। 'रंडाम भावं', 'मीशमधावन', 'नरन', 'तन्मात्रा', 'पलुंक' जैसी फिल्म इसी जमाने की है।

मलयालम पटकथा के क्षेत्र में प्रतिभा संपन्न, समाज से जुड़े और अपने चारों ओर का विस्तृत मनन और अध्ययन करने की क्षमता वाले लेखक को ही पटकथाकार के रूप में मान्यता मिलेगी। श्री टी.ए रजाक मलयालम के विख्यात पटकथा लेखक है। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत 1991 में आयी फिल्म 'विष्णुलोकम' से की थी, जिसमें मोहनलाल और ऊर्वशी ने प्रदवार रोल निभाये थे। अपने पूरे कैरियर में उन्होंने लगभग 30 फिल्मों के लिए पटकथा, कहानी और संवाद लेखन का कार्य किया।

साहित्य और सिनेमा दो अलग-अलग विधाएँ हैं। मगर दोनों का पारस्परिक संबंध गहरा है। मलयालम फिल्म जगत में कहानी से ज्यादा उपन्यास ही पटकथा रूप में बदलकर आये हैं। पोंकुन्नाम वर्कि जी की कहानी 'स्नेह सीमा' को पटकथा के रूप में बदलकर एस.एस राजन जी और सी.वी. रामनपिल्लै जी की 'मार्तान्ड वर्मा' उपन्यास को पटकथा रूप में बदल कर सी. माधवन पिल्लै जी ने इसका श्री गणेश किया था। सी.वी. श्रीरामन, के.जी सेतुनाथ, एम.टी, तकषी शिव शंकर पिल्लै, पी. वत्सला, पद्मराजन, एस.के. पोट्टकाट, वेत्तूर रामन नायर जैसे कई रचनाकारों की रचनाएँ पटकथा के रूप में आईं। अन्य भाषाओं से भी रचनाएँ पटकथा के रूप में आईं। विलियम शेक्सपियर के 'मक्बत' का 'कलियाट्टम' के नाम सेबलराम जी ने पटकथा तैयार की थी। केरल के दक्षिण प्रांत के लोक कला रूप 'तेय्यम' को आधार बनाकर लिखी गई वह रचना आज भी जनमानस में टिकी हुई है। अन्य कई फिल्मों में भी केरल के ग्रामीण इलाके की विविधता को परदे पर दिखाया है। इन फिल्मों द्वारा लोक संगीत और नृत्य का भी मनोरम दृश्य देखने को मिलता है।

तोप्पिल भासी, एस.एल.पुरमसदानंदन, के.टी. मुहम्मद, पी.जे.अन्तनी, सुरासु, पी.एम. ताज जैसे कई नाटककारों के नाटक पटकथा के रूप में तब्दील हुए। मलयालम फिल्म जगत में सबसे पहले नाटक का पटकथा के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय श्री तिक्कुरिश्शी सुकुमारन नायर को है। ढेर सारी कविताएँ भी पटकथा के रूप में आईं। कुमारन आशान के 'करुणा' नामक कविता के लिए पटकथा लिखकर वैकम चंद्रशेखरन नायर जी इस की शुरुआत की।

मलयालम पटकथा पर जो तत्त्व प्रभाव डाला, इसके बारे में चिंता करना समीचीन होगा। इसमें कुछ विश्व पटकथा के तत्त्व ही है तो कुछ मलयालम पटकथा के अपने हैं। इनमें पहला तत्व कथा कथन का है। नाना नानी की कहानी, लोक गीत, लोक कलाएँ आदि ने केरल के कथा कथन परंपरा को समृद्ध किया है। गहन अध्ययनशीलता केरल के लोगों की विशेषता है। यह भी पटकथा पर प्रभाव डालती है। सिनेमा से मूल्य गायब होने लगे तो सही सिनेमा कैसे होना है, सिनेमा का अस्वादन कैसे करना है आदि सिखाने के लिए फिल्म सोसाइटियों का आविर्भाव हुआ। अच्छी पटकथाएँ इन्हीं के कारण आने लगीं। अन्य भाषाओं से अनूदित सिनेमा का प्रचार ने भी मलयालम पटकथा को नयी ऊर्जा प्रदान की। दास वेरई जी के 'सिनिमयुडे जीवन', अडूर गोपालकृष्णन जी.के. 'सिनिमयुडे लोकम', भरत गोपी जी के 'अभिनयम अनुभवं', टी.सा. जी के 'सिनिमा संविधान' आदि रचनाएँ मलयालम पटकथा लेखकों को दिशा-निर्देश करती रहीं।

शुरु से लेकर आज तक मलयालम फिल्मों ने केरल की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सरोकारों को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मलयालम फिल्मों की सबसे बड़ी विशेषता जीवन में व्याप्त हर तरह की संवेदना को दर्शाता रहा है। राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना जगाने के सशक्त माध्यम के रूप में सिनेमा का इस्तेमाल हो रहा है।

संदर्भ

1. विजय कृष्णन, मलयाल सिनिमयुडे कथा, करंट बुक्स, त्रिशूर
2. टी.एन. जयदेवन (2000), केरलं
3. डॉ. जोस के. मनुवेल (2013), तिरक्था साहित्यम: सौन्दर्यवुम, प्रसक्तियुम
4. पन्मना रामचन्द्रन नायर (2013), चलचित्र पठननगल, करंट बुक्स, त्रिशूर

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, एम.ई.एस. अस्माबी कॉलेज, पी.वेम्बलूर पी.ओ., कोडुंगल्लूर 680 671

दिसंबर, 2019 सहयोग राशि ₹ 100

जनसंचार के सरोकारों पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका

ISSN 2249-0590

मीडिया विमर्श

मलयालम मीडिया विशेषांक